विषय- संस्कृत डॉ० ओम प्रकाश आर्य

बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा) महाराजा कॉलेज आरा

तृतीय वर्ष, षष्ठ पत्र (व्याकरण एवं भाषाविज्ञान)

दिनांक - 28/05/20

भाषा की उत्पत्ति (पूर्व से आगे क्रमशः)

Scanned with CamScanner

28/5/2020

(7) समन्वितिवाद :- अब तक भाषा की उत्पत्ति के प्रश्न से जुड़े हुए कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य छोटे तथा अमहत्त्वपूर्ण सिद्धान्त भी इस प्रसंग में प्रस्तुत किये गए हैं जिन्हें निर्णय सिद्धान्त, इंगित सिद्धान्त, विकासवादी सिद्धान्त

Scanned with CamScanner

आदि नामों से जाना जाता है। निर्णय सिद्धान्त के अनुसार प्रारम्भिक मानव ने भाषा के अभाव में आने वाली कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिए सामूहिक निर्णय के परिणामस्वरूप भाषा का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। ईंगित सिद्धान्त भाषा की उत्पत्ति को अत्यन्त आदिम संकेत भाषा में ढूँढने का प्रयास करता है। विकासवादी सिद्धान्त में मानव के विकास के समान भाषा के भी क्रमिक विकास की परिकल्पना की गई है। स्पष्ट है कि इनमें से कोई भी सिद्धान्त या वाद भाषा की उत्पत्ति के प्रश्न का पूर्ण समाधान प्रस्तुत नहीं करता। कुछ विद्वानों की यह धारणा है कि भाषा की उत्पत्ति मानव जाति के इतिहास में उस समय हुई होगी जब मानव को सहसा ऐसा आभास हुआ होगा कि अपनी विचार प्रणाली और ध्वनिप्रणाली के परस्पर संयोग से वह अपने भाव एवं विचार दूसरे पर व्यक्त कर सकता है।

पर वास्तविकता यह है कि भाषा की उत्पत्ति के प्रश्न का समाधान ~~इस~~ इन सिद्धान्तों, वादों अथवा विचारों में अकेले-अकेले नहीं है, इनके समन्वित रूप में है। ईश्वरीय प्रेरणा, बाह्य प्रकृति का प्रभाव, मनोभावों का आवेग, शारीरिक श्रम की विवशता, वैचारिक स्तर का दबाव- इन सभी के मिश्रित प्रभाव के परिणामस्वरूप भाषा की उत्पत्ति शनैः शनैः परन्तु निश्चित रूप से होती

रही। जो विद्वान् इस प्रकार के सिद्धान्त की खोज में हैं जो भाषा की सहसा उत्पत्ति का प्रश्न सुलझा सके, उन्हें सम्भवतः निराशा का सामना करना पड़ सकता है। भाषा का उपलब्ध इतिहास भी यही सिद्ध करता है कि भाषा के विकास का आधार उसकी परिवर्तनशीलता है और प्रत्येक भाषा में परिवर्तन शनैः शनैः निश्चित रूप से आता है। भाषा की उत्पत्ति का दर्शन भी इसी परिप्रेक्ष्य में निर्मित करना स्वाभाविक और वैज्ञानिक प्रतीत होता है। इति।

Scanned with CamScanner